10+2 विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा का महत्व

डॉ0 संतोष कुमार सिंह*
राई–बीगों, सुल्तानपुर

प्रस्तावना

भारत में जनसंख्या का विस्फोट द्रुतगति से हो रहा है। हमारे देश में प्रति वर्ष एक नया आस्ट्रेलिया जन्म लेता है अर्थात् आस्ट्रेलिया की जितनी जनसंख्या है उतनी जनसंख्या हमारे देश में प्रतिवर्ष बढ़ रही हैं। आज हमारे देश की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ से अधिक है। जहाँ 28 राज्य 7 केन्द्रशासित राज्यों, 640 जिलों तथा 6.41 लाख गांवों में जनसंख्या निवास करती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 में केन्द्र सरकार को देश की जनगणना करने का अधिकार दिया गया है, स्वतन्त्रता के बाद 1948 में ''जनगणना अधिनियम'' पारित किया गया है।

भारत में जनसंख्या एवं साक्षरता–

31 मार्च 2011 को ''हमारी जनगणना हमारा भविष्य'' शीर्षक वाक्य के साथ भारत की जनसंख्या 1अरब 21 करोड़ हो गयी है, जो 2001 में 102.87 करोड़ थी। जिसमें सर्वोच्च जनसंख्या वाले राज्य उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, विहार, प0बंगाल एवं आन्ध्रप्रदेश है। जबकि साक्षरता 2011में 74. 04% है जिससे सर्वोच्च साक्षरता वाले राज्य केरल, लक्ष्यदीप, मिजोरम, गोवा, त्रिपुरा है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के मुख्यतः कुछ कारण है–

ऊँची जन्म दरः–

1. विवाह का स्त्रियों में सर्वव्यापक होना
2. मात्रृत्व का विवाहित स्त्रियों में सर्वव्यापक होना
3. कम उम्र में विवाह होना
4. गरीबी की व्यापकता तथा जनसंख्या के बड़े भाग की कृषि पर निर्भरता
5. सामाजिक मूल्य तथा धार्मिक अंध विश्वास
6. परिवार नियोजन तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी का अभाव

इन सभी कारणों के अतिरिक्त कुछ प्रमुख कारण और भी अधिक उत्तरदायी है जो जनसंख्या वृद्धि में सहयोग कर रहें है–

डॉ0 संतोष कुमार सिंह* राई–बीगों, सुल्तानपुर

1. ग्रामीण क्षेत्र शहरी क्षेत्रो की तुलना में सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े हुए है और उनमें विभिन्नता सर्वव्यापी है। पारिवारिक आय काम करने वाले सदस्यों पर निर्भर करती है इसलिए ग्रामीण क्षेत्रो में सामान्यतः बड़े परिवारों को मान्यता दी जाती है।
2. निर्धनता के कारण बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के लिये विद्यालय नही जा पाते और अल्पायु से ही काम करने लगते है जो कि परिवार की आय में वृद्धि करते है। निम्न जीवन स्तर के कारण उनके पालन पोषण पर अधिक व्यय भी नहीं होता है। इसी कारण अधिक बच्चे परिवार पर भार नही समझे जाते है।
3. अशिक्षा तथा निर्धनता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उपयुक्त चिकित्सा तथा जन्म निरोधक साधनों की कमीं पायी जाती है। अधिकांश जनता परिवार नियोजन के कृत्रिम उपायों से प्रायः अनभिज्ञ होने के कारण भी परिवार नियाजन में रूचि नहीं लेते है।

जनसंख्या वृद्धि के सिद्धान्तः–

वह मानव समाज जो दो विपरीत दशाओं के मध्य का है जहाँ खाद्य पूर्ति की स्थिति सामान्यतः अच्छी है वहाँ जनसंख्या स्थाई होती है। इस प्रकार किसी राष्ट्र में जनसंख्या की वृद्धि या ह्रास इन्ही दशाओं पर निर्भर करती है।

जनसंख्या वृद्धि के कतिपय उपाय :–

1. शिक्षा के प्रचार–प्रसार से
2. सही उम्र में शादी करके
3. परिवार कल्याण द्वारा
4. चिकित्सा सुविधाओं की वृद्धि से
5. शिशु और मॉ की देखभाल द्वारा
6. स्त्रियों के स्तर में उन्नयन करके

जनसंख्या वृद्धि को रोकने में माध्यमिक विद्यालयों की भूमिका :–

जनसंख्या वृद्धि को रोकने में विद्यालय स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके लिए प्रभावशाली शिक्षण व्यवस्था की महती आवश्यकता है। विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यक्रम के माध्यम से अभिवृद्धित जनसंख्या के दुष्प्रभावों को चार्टों, मॉडल्स, रेडियो, दूरदर्शन के माध्यम से उन्हें समझाया जाय। परिवार नियोजन के महत्व को बताया जाय। पर्यावरण के प्रदूषण के दुष्प्रभावों को हृदयंगम कराया जाय। ऐसा एकीकृत पाठ्यक्रम प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर पर निर्मित किया जाय, जिसके माध्यम से सभी स्तर के विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में शिक्षित, दीक्षित एवं परिलक्षित किया जा सके। इसके अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से जनसाधारण को इन दो प्रमुख समस्याओं

की अवगति दी जाय, जिससे वे प्रदूषण नियन्त्रण के लिए सौर ऊर्जा, बायोगैस निर्धूम चूल्हे, पवन चक्की, उन्नत शव दाह गृहों का उपयोग कर सकें तथा परिवार नियोजन अपनाकर बढ़ती हुई जनसंख्या पर लगाम लगा सकें।

शिक्षकों द्वारा उठाये गये कदम :–जनसंख्या वृद्धि को रोकने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। वे स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत कर बच्चों द्वारा तथा उनके माता–पिता पर प्रभाव डाल सकते हैं। अध्यापक पाठ्यसहगामी क्रिया–कलाप के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि को रोकने में सफलतापूर्वक प्रयास कर सकता है–

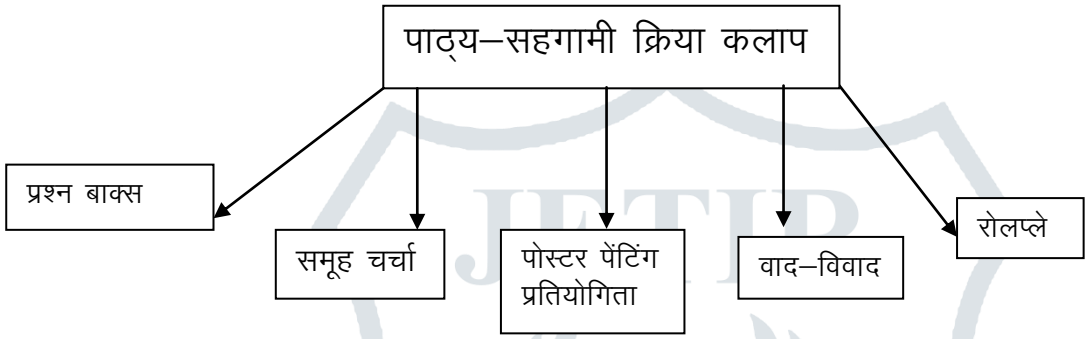

शिक्षकों की भूमिका :–

1. पी0टी0ए0 व एम0टी0ए0 की बैठकों में कैशोर्य समस्याओं के निदान के तौर–तरीके अभिभावकों को बताएँ।
2. किशोरवय बच्चों को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों की जानकारी दें।
3. किशोरावस्था की सम्भावित समस्याओं के प्रति किशोर–किशोरियों को जागरूक करें।
4. नशीले व मादक पदार्थों का सेवन न करने हेतु प्रतिरोध करने का कौशल विकसित करे।

विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के माध्यम से जनसंख्या नियन्त्रणः–

विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राएं एक लघु प्रोजेक्ट के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि के कारण, दुष्परिणाम रोकने के उपाय आदि का उल्लेख करेंगे तथा इसे गॉव, क्षेत्र, कस्बों के लोगों को जागरूक करने हेतु ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य आदि के माध्यम से चौपाल लगाने की व्यवस्था करेंगे तथा उन्हें जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों से अवगत करायें। उन्हें यह बताने का प्रयास भी करेंगे कि हम दो हमारे दो की अवधारणा क्यों लाभकारी है, उन्हें यह भी बताने का प्रयत्न किया जाना चाहिए कि अधिक सन्तान होने से उनकी देखभाल शिक्षा, पोषण, भोजन, वस्तु आदि की व्यवस्था नहीं हो पाती है जिससे उनका जीवन भार स्वरूप बन सकता है।

उपरोक्त तथ्यों को समझाने के लिए नुक्कड़–नाटकों का आयोजन भी किया जाना चाहिए तथा प्रोत्साहन स्वरूप सम्बन्धित ग्राम प्रधानों, क्षेत्र पंचायतों, जिला पंचायत सदस्यों द्वारा छात्र–छात्रों के

सहभागिता सम्बन्धित प्रमाण पत्र, प्रोत्साहन पत्र आदि भी वितरित किये जाने चाहिए तथा उन्हें पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें, कापियां तथा अन्य लेखन सामग्रियां प्रदान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संकट, प्रदूषण, जल आपूर्ति, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं विश्व व्यवस्था पर दुष्परिणाम, आदि प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

हमारे देश में मृत्यु दर पर तो अच्छा नियन्त्रण स्थापित किया गया है लेकिन उसकी तुलना में जन्मदर को कम करने में उतना सफल नहीं हो रहे हैं, जितनी हमारी आवश्यकता है। ऊॅची जन्मदर देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है और किसी भी राष्ट्र के लिए जहॉ मृत्युदर कम होना आवश्यक है वही जन्मदर पर पूर्ण नियन्त्रण करना उसकी दूसरी सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

साक्षरता की दर जितनी कम होगी बच्चे उतने ही अधिक पैदा होंगे अर्थात् साक्षरता जनसंख्या वृद्धि को रोकने में सहायक है। साथ ही स्त्री साक्षरता दर जितनी बढ़ेगी उतनी ही उसकी सन्तानोत्पत्ति की संख्या में कमी होगी। शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि परिवार कल्याण के लिए सरकारी सहायता और समर्थन प्राप्त हो तो सन्तानोत्पत्ति की दर में कमी आती है। देश की ऊॅची जन्मदर का ही परिणाम है–

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. जनसंख्या एवं नगरीकरण – मधुवन पब्लिकेशन
2. Indian educational Report - By R. Govinda,
3. सबके लिए शिक्ष आंकलन वर्ष 2000
4. शिक्षा की प्रगति 2005–06 शिक्षा निदेशालय (उ0प्र0)
5. Progress of Literacy in India -Prepaared by-Arun C. Meta
6. Education in India - By Dr. D. Bhasker Rao